प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

सुभारती

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

www.subhartimedia.com | लखनऊ, बुधवार, 23 जनवरी 2019, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12 | उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित

बसपा ने मेरठ समेत दो दर्जन सीटों पर तय किए प्रत्याशी : पेज–12

पूरी दुनिया भर में हिमयुग जैसी स्थिति क्यों : वैज्ञानिक चिंतन

लखनऊ। प्रभात

अभी पिछले कुछ दिनो से विश्व के तमाम देशो मे भारी हिमपात हो रहा है। यूरोप के पमुख देशो जैसे जर्मनी स्विटजरलैड, आस्ट्रिया आदि स्थानों पर 5 जनवरी से 10 जनवरी 2019 तक 20 सेटीमीटर से 1 मीटर अर्थात एक फीट से 3.5 फ़ीट तक भारी वर्फ्बारी ने पूरे देश को बर्फीले तूफानों के आगोस मे ले लिया। यहा तक कैलीफोर्निया के उत्तरी पहाडी भी इस साल चपेट मे है। भारतवर्ष मे पिछले एक माह से पहाडी इलाकों में तथा राजस्थान के ऊंचे इलाकों मे भी भारी बर्फ पड़ी और कई जगह तापमान शून्य से 20 डिग्री सेंटीग्रेड तक नीचे चला गया। इस समय लगभग विश्व के अधिकांश भागो में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह का कहना है कि हिमपात व चक्रवात आने के मुख्य कारण मध्य अक्षांश के चक्रवात निम्न दबाव वाले क्षेत्र होते हैं जो बादलों और हल्के बर्फीले तूफानों से लेकर भारी बर्फानी तूफान तक कुछ भी उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं। किसी गोलार्ध के नीचे पहुचने से सर्दियों और वसंत के दौरान महाद्वीपों के ऊपर का वातावरण हिमपात के कारण क्षोभमंडल की गहराई तक़ काफी ठंडा हो जाता है।

प्रो. भरत राज सिंह का कहना है कि आज ग्लोबल वार्मिंग इस छोटे व नीले पृथ्वी ग्रह के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है 2010 मे एक नया रिकॉर्ड बनाया गया थाए जब शिकागो में लगातार नौवें दिन बर्फ्बारी हुई और मिशिगन फ्लिंट मे 95 साल का पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया थाए जब तापमान में गिरावट शून्य से 19 डिग्री सेंटीग्रेड नीचे आ गई थी। जब कि पिछला रिकॉर्डय माइनस 10 डिग्री सेंटीग्रेड 1914 में सेट हुआ था। इस बीच आने वाले दिनों में शिकागो में बर्फ जारी होने की प्रबल संभावना है। माइकल वैन डेर गलेन ने स्पष्ट किया कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही ठंडा पडती है। वर्ष 2009.2010 की सर्दियों में कई नाटकीय रिकॉर्ड तोड़ बर्फबारी देखी गई। फरवरी की शुरुआत में 100 साल में एक बार दो बर्फीले तूफानो ने फिलाडेल्फिया को आगोश लिया, जिसे अब स्नोमेडेडोन कहा जा रहा है। प्रश्न उठता है कि क्या इस प्रकार की रिकॉर्ड बर्फ्बारी साबित करती है कि ग्लोबल वार्मिंग नहीं हो रही है इसके अवलोकन से क्या निष्कर्ष निकलता हैं। जबकि 2009 रिकॉर्ड से वह दूसरा सबसे गर्म वर्ष था। जनवरी 2010 न।भ् उपग्रह के रिकॉर्ड में सबसे गर्म माह जनवरी 2010 था तथा उपग्रहों का डेटा दर्शाता है कि दूसरा सबसे गर्म माह फ़रवरी 2010 था। उपरोक्त के अवलोकन से हमें पता लगता हैं कि वर्तमान मे ग्लोबल वार्मिंग की अफ्वाहों को हो रही मौत के कारणो के रूप मे बहुत बढ़ा.चढ़ा कर पेश किया जाता है।

लुढ़का पारा

- विश्व के तमाम देशों में भारी हिमपात से जनजीवन अस्तव्यस्त
- कई जगह तापमान शून्य से 20 डिग्री सेंटीग्रेड तक गिरा

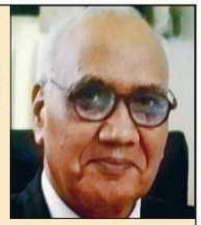

प्रो.भरत राज सिंह
महानिदेशक
एसएमएस, लखनऊ

भारी बर्फबारी के बैंड के कारण

संयुक्त राज्य अमेरिका में कहीं भी बर्फके संकीर्ण बैंड हो सकते हैं। 20 नवंबर 2015 को संकरी बर्फ़बारी का एक उत्कृष्ट उदाहरण दक्षिण.पूर्वी दक्षिण डकोटा और उत्तरी आयोवा में बर्फबारी के कारण पाई गई थी । इंटरस्टेट 90 के उत्तर में अंतरराज्यीय 90 के दक्षिण से बर्फबारी में बड़े अंतर या कमी को नोटिस किया गया । ९.90 के दक्षिण में ऐपवनग फॉल्स के दक्षिण की ओर से उत्तर.पश्चिम आयोवा में दक्षिण में 12 से 18 इंच बर्फथी। अंतरराज्यीय 90 के उत्तर में बर्फबारी तेजी से घटकर 6 इंच से भी कम हो गई जिसमें कोई बर्फबारी उत्तर की ओर ब्रुकिंग्स और मार्शल की ओर नहीं थी। वास्तव में लगभग 20 मील की दूरी पर बर्फबारी 2 से 4 इंचए 16 से 18 इंच तक बढ़ गई। इससे यह जानना आवश्यक है कि भारी बर्फबारी के बैंड क्यों बनते हैं और बर्फबारी के रूप में इस तरह के एक विशेष अंतर कैसे हो सकता है।

यूरोप मे तापमान में भारी कमी और भीषण हिमपात का वैज्ञानिक कारण

सम्पूर्ण यूरोप पिछले 5 जनवरी 2019 से 11 जनवरी 2019 तक भीषण बर्फवारी के चपेट मंब था जिससे जनवरी.फरवरी के अंत तक तापमान को सामान्य से नीचे ले जाने की स्थिति पैदा हॉ गई है और रोम मे असामान्य रूप से भारी बर्फ हो रही हैं। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार वास्तव में यह कहीं और बेमौसम गर्म हवाओं का परिणाम है जिसने यूरोप को भीषण ठंड की परिस्थितियों को पहुचाने में मदद की। दि गार्जियन के अनुसार लिथुआनिया में ठंड के मौसम से कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई है जहां तापमान 15 डिग्री सेल्सियस तक पहुच गया है। इस घटना के पीछे वैज्ञानिकों का कहना है कि इस साल आर्कटिक पर असामान्य रूप से गर्म मौसम है। ऐसा लगता है कि ठंड लग रही है लेकिन औसतन पिछले समय की तुलना में लगभग 20 डिग्री सेल्सियस (36 फ़ारेनहाइट) अधिक है। जहा पहले तापमान (60 से) 90 डिग्री सेल्सियस हुआ करता था जो इस वर्ष आर्कटिक पर असामान्य रूप से गर्म मौसम दिखाता है।

उपरोक्त तथ्यो से स्पष्ट हो रहा है कि विश्व के तमाम देशो मे भारी हिमपात जो हो रहा है वह आर्कटिक पर असामान्य रूप से गर्म मौसम आ जाने के कारण वहा की वर्फकी चट्टाने लगभग आधे से अधिक समाप्त हो गई है और अधिकांशतः या तो वह पिघलकर वाष्पीकरण के माध्यम से जमीन के ऊपर 30000 और 45000 फीट ऊचाई पर स्थापित हो गई है जिससे आर्दता के बढने के कारण जहा भी जलवायु मे थोडा भी परिवर्तन हो रहा है पुरे विश्व मे भारी हिमपात तूफनी चक्रवात हुरीकेन सुनामी आदि की स्थिति पैदा हो रही है। दोनो ध्रुवो पर वर्फसमाप्त होने से एक तरफ समुद्री सतह मे 4.5 फीट तक बढोत्तरी होने की सम्भावना 2030.2040 तक होना नकारा नही जा सकता है । जिससे वैश्विक आपदाओ की तीव्रता प्रत्येक वर्ष बढती जायेगी और जन.मानस व जीव.जंतु के भीषण नुकसान को रोका नही जा सकता है। अतः विश्व के सभी देशो को मिलकर ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न हो रही जलवायु.असंतुलन की विभीषिका को रोकने के सार्थक उपाय करने होगे जिसमे चाहे अधिक से अधिक पेड लगाना हो या हाड्रोकार्बन ईधन के जगह वैल्कल्पिक अथवा अक्षय ऊर्जा का उपयोग करना हो।